अंक 5

WWW.VITHIKA.ORG

अक्टूबर 2023

बापू

वीथिका ई पत्रिका

साहित्य, कला, विज्ञान और संस्कृति को समर्पित

वीथिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय	चित्रा मोहन	सुमित उपाध्याय
प्रधान संपादक	मुख्य सलाहकार संपादक	प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

श्री मनोज कुमार सिंह

श्री अविनाश पाण्डेय

डॉ अखिलेश पाण्डेय

जय श्री

डॉ शिवमूरत यादव

उज्जवल उपाध्याय

अश्विनी तिवारी

अर्चिता उपाध्याय

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

संरक्षक
यशिका फाउंडेशन, मऊ

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह

डॉ धनञ्जय शर्मा

डॉ सुधांशु लाल

एड. सत्यप्रकाश सिंह

विनोद कोष्टी

श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
पूजा मद्धेशिया

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

आपकी गलियां

अंक 05

अक्टूबर, 2023

गलियों की बात 04

महात्मा : जहाँ हों वहां 05

महात्मा 06

गांधी दर्शन की आधुनिक प्रासंगिकता 09

हम याद बहुत आएंगे 13

संगीत जीवन में और जीवन संगीत में 18

INDIA AND AI 20

MERT ENGEM SZERETSZ 24

कोणार्क सूर्य मंदिर में संगीत 25

सोंधी मिट्टी 27

गलियों की बात

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे पीड परायी जाणे रे ।
पर दु:खे उपकार करे तो ये
मन अभिमान न आणे रे ॥

हमने वीथिका पत्रिका का आरंभ भारतीय संस्कृति के विविध रंगों से जुड़ने और समाज के अलग-अलग राहों से नए रंग लाने हेतु किया जिससे अपनी सभ्यता और संस्कृति के रास्ते वर्तमान की समस्याओं और चुनौतियों का हल खोजा जा सके । महात्मा गाँधी जी ने हमारे समाज को सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता का ऐसा मन्त्र दिया की सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा जैसे सूत्रों से भारत ने अंग्रेजी साम्राज्य को सूर्यास्त दिखा दिया ।

आज समाज में हर तरफ जो हिंसा, भेद-भाव फैला है, उसका हल गाँधी जी के इस भजन में है । हमें दूसरों की सहायता आगे बढ़ कर करनी है, पर इसका थोडा भी अभिमान मन में नहीं आने देना ।

आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस के द्वार सामने हैं, हमे विज्ञान और संस्कृति के मेल से एक नव-समाज का निर्माण करना है ।

महात्मा : जहाँ हों वहां

कार्टूनिस्ट : कृतिका सिंह

स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों में महात्मा गाँधी कभी देश के इस कोने में होते तो कभी उस कोने में. ऐसी स्थिति में देश-विदेश से लोग अपने पत्र बापू को भेजते थे. उन्हीं पत्रों में से कुछ पर लिखा होता - "महात्मा, जहाँ हो वहां"

और बड़ी बात ये की ये पत्र बापू तक पहुँच भी जाते. वो उन्हें पढ़ते और उत्तर देते.

ये थे बापू और इतना विशाल था उनका प्यार

म हा त् मा

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
डी.सी.एस.के. महाविद्यालय, मऊ

गाँधी जी, सामान्य रूप से अपनी अहिंसा की नीति के लिए प्रसिद्ध हैं । यह वही अहिंसा की नीति है जिसको पहले कायरता का लक्षण माना जाता था। यह केवल गाँधी जी ही हैं जिन्होंने अहिंसा के चमत्कार को पहचाना और दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति को इस नीति से मात दिया। ऐसी मात कि खुनी ब्रिटिश साम्राज्य बिना खून-खराबे के ही हिन्दोस्तान से विलुप्त हो गया और देखते ही देखते गाँधी किसी के लिए बापू, किसी के लिए महात्मा और हम सब के लिए राष्ट्रपिता के रूप में अवतरित हो गये।

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई को हुआ। उनकी जयंती को "अन्तराष्ट्रीय अहिंसा दिवस" (International Day Of Non Violence) के रूप में भी मनाया जाता है, मगर वहीँ 30 जनवरी 1950 हम सब के लिए दुखद भी है। इसी दिन अहिंसा के इस पुजारी हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शरीर को नाथूराम गोडसे ने छलनी कर डाला।

महात्मा गाँधी : कलाकृति पूजा मद्धेशिया

हिन्दोस्तान के इतिहास में अनेकों सितारे हुए हैं उनमें से अधिकतर सितारों ने जागरूक दिमागों को प्रभावित किया है, मगर गाँधी का व्यक्तित्व ही ऐसा है जिसने आम लोगों को प्रभावित किया। दक्षिण अफ्रीका से वापस आये पन्द्रह वर्ष हुए थे कि अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से चार सौ किलोमीटर लम्बी दांडी मार्च करके जन-जन के उपयोग में आने वाले नमक की अंग्रेजों को चुनौती देकर नमक कानून की अवहेलना एक मुट्ठी नमक से क्या किया कि यह एक मुट्ठी नमक, नमक नहीं रह गया अपितु जन-जन की धड़कन गाँधी जी मुट्ठी में बंद हो गयी और रातों-रात गाँधी जी सार्वभौमिक नेता बन गये । गाँधी जी ने इंग्लॅण्ड से बैरिस्टरी की थी, दक्षिण अफ्रीका में अब्दुल्ला की कम्पनी में वकालत की। इस उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीका गये और इक्कीस वर्ष वहीँ रहे। 1915 में जब भारत लौटे तो उनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें भारत भ्रमण करने का सुझाव दिया। उस समय गाँधी जी सूट-बूट-हैट-टाई वाले थे, ऐसे परिधान में वह भारतीयों के पास उनके अपने बनकर कैसे जाते, यही वो समय था जब उन्होंने अंग्रेजी परिधान का परित्याग किया और जैसे लोग वैसा वेश-भूषा में आ गये। यह गाँधी जी की एक चमत्कारी शुरुआत थी जिसका प्रभाव भारतीयों से अधिक अंग्रेजों पर पड़ा। एक धोती में लिपटा टोरसो जैसा व्यक्ति गोलमेज सम्मलेन में गया तो सम्पूर्ण परिदृश्य ही देखने लायक हो गया। ठंड के मारे सारे प्रतिनिधि गर्म कपड़ों और सूट में थे मगर यह नंगा बाबा अकेले धोती में लिपट कर मानो प्रधानमंत्री रैमसे को चुनौती दे रहा था। सही अर्थों में प्रधानमंत्री इस दृश्य से भयभीत हो रहे थे। गाँधी की हिम्मत और चट्टान जैसा दृढ संकल्प पूरे सम्मलेन पर छाया रहा।

इतिहास को अपने समय और स्थान में रख कर ही देखा और समझा जा सकता है, सोचिये अगर यह कहा जाये कि पहले के राजा मुर्ख होते थे वे गर्मी से बचने के लिए करोड़ों के महल बनवाते और मानव संचालित पंखे लगवाते थे, उन्हें इतनी भी बुद्धि नहीं थी पचास-पचीस हज़ार की एसी लगवाकर चैन सुकून से रहते। मगर आप ही सोचिये कि इतिहास को समय से हटाकर देखना कितना गलत हो जाता है। वैसे ही गाँधी जी को समझने के लिए 1922 का टाइम-ट्रेवल करना आवश्यक है। आज तो हिंदुस्तान एक सैन्य संपन्न, परमाणु हथियार से युक्त देश है। तब भी के आज के ब्रिटेन से भारत का टकराना आसान नहीं होगा। जबकि 1922 के भारत का मुकाबला सर्वशक्तिमान ब्रिटिश साम्राज्य से था। उस समय भारतीयों की स्थिति ऐसी थी कि खाने को रोटी नहीं,पहनने को कपडा नहीं, शिक्षा का नामोनिशान नहीं था। वहीँ सैकड़ों जातियों में लोग बंटे हुए थे, धर्मो में सने हुए थे, सैकड़ों प्रकार के अंधविश्वास में डूबे हुए थे। राष्ट्र की भावना शून्य थी। बिहार, बंगाल, उड़िसा के पुरे तथा मद्रास एवं बनारस के कुछ स्थानों के स्थायी जमींदार ब्रिटिश शासन के स्थायी वफादार थे। ब्रिटिश सैनिक जो अधिकतर भारतीय थे मगर ब्रिटिश के लिए ही लड़ते-मरते थे ऐसी अनगिनत विपरीत परिस्थितियों में गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन चलाकर न केवल ब्रिटिश शासन की चूलें हिला दीं बल्कि भारतीयों में एक झटके से राष्ट्रिय भावना जगाकर एकता का नशा चढ़ा दिया। यह है गाँधी जी का असल जादू। यह गाँधी जी ही थे जिन्होंने चौरी-चौरा की घटना के बाद आन्दोलन वापस ले लिया, अन्यथा खून का का प्यासा ब्रिटिश प्रशासन भारतीयों की खून से न जाने कितनी होलियाँ खेलता। गाँधी के अहिंसा की ताकत असल में यहीं दिखती है जिसने ब्रिटिश की चूलें भी हिलायीं और हमारा खून बहने से भी बचाया।

आज जी 20 की महान शक्तियां गांधी जी को नमन करने राजघाट पहुंची, पूरी श्रद्धा के साथ गाँधी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया। यह हमारे लिए गर्व का क्षण था कि दुनिया ने माना कि सत्य और अहिंसा का पाठ दुनिया को गाँधी जी ने पढाया है। दुनिया यह भी मानती है कि गाँधी जी के द्वारा चलाये गये अहिंसक आन्दोलन ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की सफलता में अभूतपूर्व भूमिका निभायी है । इसीलिए दुनिया उन्हें अहिंसा के पुजारी के रूप में जानती और मानती है।

यह गाँधी का "सत्य का सिद्धांत" ही था जिसने गाँधी को अपनी ही बुरायी अपने ही शब्दों में बयान करा दिया। जिसे उनके निंदक और आलोचक सुनकर गाँधी की निंदा करने लगे। हमको तब उनके मानसिक दिवालियापन पर केवल दया ही आती है। पीठ पीछे तो छोड़िये अगर गाँधी जी सामने भी होते तो गाली देने वाले का वो मुस्कुराकर स्वागत ही करते और यही कहते-

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, इनको बुद्धि दे भगवान

"गांधी दर्शन की आधुनिक प्रासंगिकता"

मोहनदास करमचंद गांधी भारतीय राजनीति में वटवृक्ष के समान हैं। वे एक साथ राजनीतिक चिंतक, समाज सुधारक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आंदोलनकर्ता, जननायक, चिंतक तथा इन सब से बढ़ कर महान संत हैं। उनके चिंतन का केंद्र बिंदु मानवता का विकास है। राजनीति को उन्होंने नैतिकता के साधन के रूप में देखा और उसका उसी रूप में प्रयोग भी किया। व्यक्तिगत जीवन में जो जो समस्याएं आई उसका समाधान करते हुए इन समस्याओं के लिए को सिद्धांत बनाए, वहीं सिद्धांत आगे चलकर गांधीवादी विचारधारा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

डॉ धनञ्जय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
सर्वोदय पी.जी. कॉलेज, घोसी, मऊ

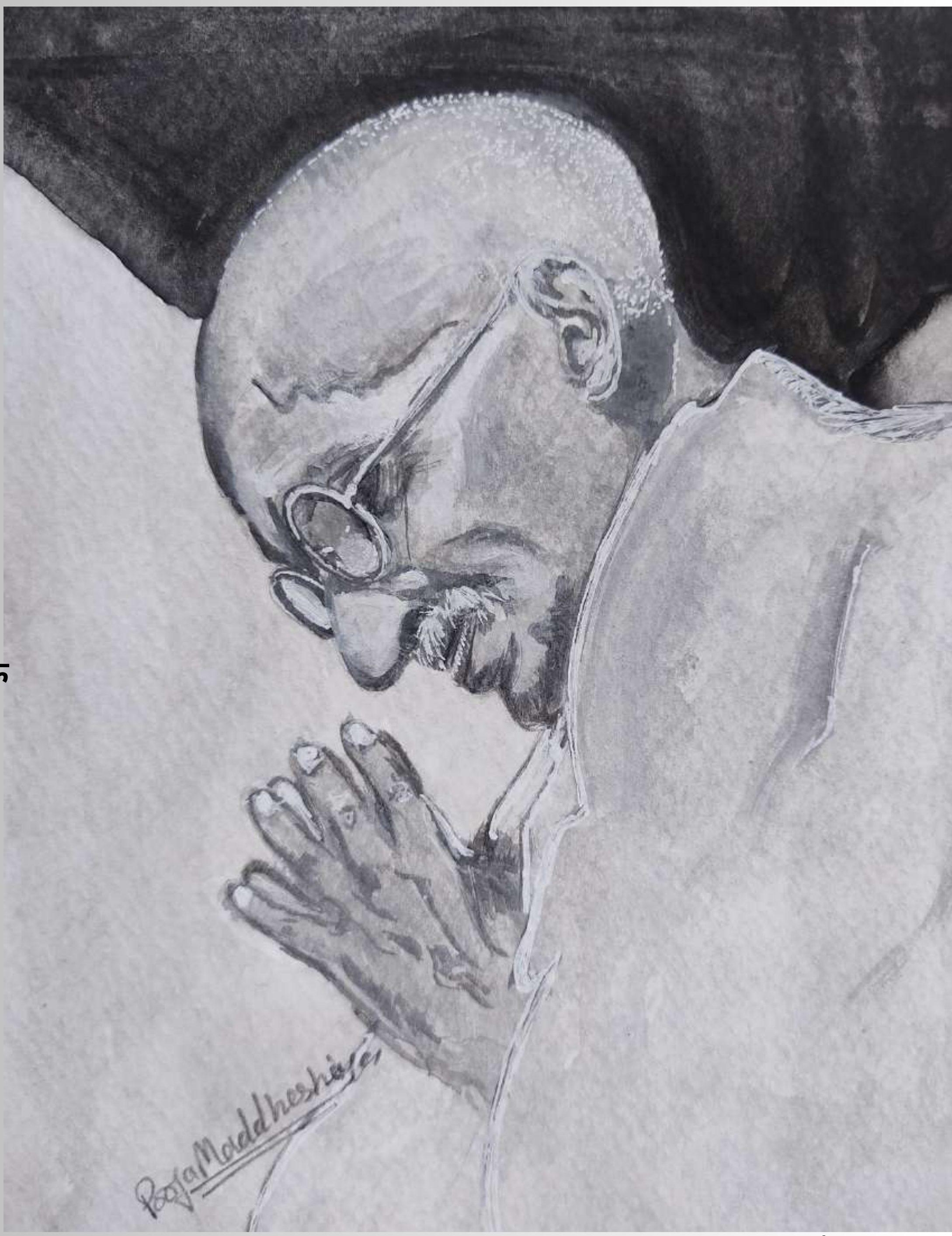

गाँधी जी के चिंतन का प्रमुख आधार सत्याग्रह, स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो आंदोलन प्रमुख हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लिखी गई पुस्तकें, 'सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका', ' हिंद स्वराज' एवं आत्मकथा 'मेरे सत्य के प्रयोग' तथा अस्पृश्यता निवारण की दिशा में किए गए प्रायस। इन सारी रचनात्मकता के केंद्र में 'हिंद स्वराज' को गांधी के वैचारिक वट-वृक्ष का मूल बीज माना जा सकता है। यही वह पुस्तक है जिसमें गांधी जी अपने राजनीतिक सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं। 20वीं शताब्दी के पहले दशक में लिखी गई यह पुस्तक एक अद्वितीय कृति है जो पश्चिमी सभ्यता और विकास के पश्चिमी प्रतिमान पर गंभीर सवाल पैदा करती है। इस पुस्तक में गांधी जी ने पश्चिम से अपनी वैचारिक मतभेद की घोषणा की है। धर्म का असल रूप क्या है? धर्म और राजनीति क्या है? धर्म और राजनीति के बीच क्या संबंध है? इन सवालों के साथ हिंसा, भूख, गैर बराबरी, नैतिकता के सरोकार, प्रकृति का भयंकर दोहन जैसी वर्तमान समय की ज्वलंत समस्याएं, जिनका वैकल्पिक समाधान गांधी दर्शन में खोजा जा सकता है। इससे गांधी जी की विचारधारा का पता चलता है कि उन्होंने इन समस्याओं को कैसे सौ साल पहले देखा था। इन समस्याओं का समाधान भी हिंद स्वराज में दिया गया है।

हिंद स्वराज में गांधी के वे सारे विचार हैं जो पश्चिमी सभ्यता के विरोध में लिखे गए थे। चाहे पश्चिम की औद्योगिक विचारधारा हो या भारत में रेल, डॉक, तार आदि सभी को गांधी जी ने भारत को गुलाम बनाने का प्रयास बताया है। दुनिया में हर तरफ बढ़ती हिंसा और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध शोषण। पर्यावरण और मानवीय जीवन पर आ रहे संकट ने दुनिया भर के चिंतकों का ध्यान गांधी दर्शन की तरफ आकर्षित किया । हिंद स्वराज में सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) की संकल्पना को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया गया है

महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीतिक मंच पर असहयोग और स्वदेशी पर बहुत बल दिया। असहयोग और स्वदेशी ही ऐसे तत्व हैं जिनके द्वारा हम भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़ सकते हैं क्योंकि जब कोई देश अपनी विरासत और परंपरा के विशिष्ट तत्वों से विचलित होकर किसी दूसरी संस्कृति के भौतिक ढांचे पर आश्रित होता है तब ओढ़ी हुई संस्कृति पराजित मानसिकता को जन्म देती है और देश गुलाम हो जाता है। इस प्रकार गांधी जी ने भारत की आजादी के लिए पश्चिमी सभ्यता के प्रति देश के व्यापक हिस्से में जन आंदोलन किया। पश्चिम के आकर्षण को दूर करने के लिए 'स्वदेशी' और 'असहयोग' पर सर्वाधिक जोर दिया। स्वदेशी का अर्थ अपने पड़ोस से उत्पन्न संसाधनों के आधार पर जीवन शैली बनाने की रणनीति है, गांधी जी कहा करते थे कि "मेरी भौतिक जरूरत के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है और मेरी आध्यात्मिक जरूरत के लिए समूची दुनिया मेरा गांव है।"

आज भूमंडलीकरण के बदले स्थानीयता को अपनाने, अस्तित्व एवं अस्मिता को ना छोड़ने वाली गांधी जी की यह वैश्विक दृष्टि आज हमारे लिए कितनी प्रासंगिक है। दो-दो महायुद्ध हो गए तीसरे महायुद्ध की शुरुआत हो चुकी है पूरी दुनिया आज हिंसा के चपेट में है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या हिंसा को हिंसा से मिटाया जा सकता है? क्या आग को आग से बुझाया जा सकता है? यदि अन्याय को न्याय से, घृणा को प्रेम से, असत्य को सत्य से और हिंसा को अहिंसा से पराजित किया जा सकता है तो गांधी का दर्शन आज भी प्रासंगिक है। गांधी जी ने मानवता को अहिंसा का पाठ पढ़ाया, राजकीय हिंसा और जनता की हिंसा दोनों को त्याज्य बताया। दरअसल गांधी जी बहुत पहले यह मान चुके थे,"हिंसा कभी किसी समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो सकती। हिंसा से प्राप्त की गई सत्ता का चरित्र भी अंततः हिंसक ही होता है।" अतः गांधीजी ने हिंसा का जवाब सत्याग्रह, अहिंसा और आत्मबल से देने की बात कही है। सत्याग्रह अर्थात सत्य के लिए झुकना नहीं, सत्य के लिए आग्रह करना, जबकि सामने वाला भले ही कमजोर हो। विश्व के सबसे बड़े साम्राज्यवादी शक्ति से अहिंसात्मक युद्ध करने की बात करते हैं। 'हिंद स्वराज' में लिखते हैं "शरीर का उपयोग गोला बारूद के काम में लाना हमारे सत्याग्रह के कानून के खिलाफ है। आज हिंसक संघर्ष का कोई भविष्य नहीं, साम्राज्यवादी शक्तियों को हिंसा से परास्त नहीं किया जा सकता है।"आज लिट्टे जैसा संगठन भी परास्त हो चुका है। आज देश में माओवाद, नक्सलवाद, उग्रवाद, आतंकवाद जैसे अनेक हिंसक संगठन अस्तित्व में है लेकिन हिंसा का समाधान हिंसा में नहीं है। हिंसा के मार्ग को पूरी तरह नकारते हुए गांधी जी ने भगत सिंह की फांसी पर अफसोस व्यक्त करते हुए कहा "हम उनका अनुसरण नहीं कर सकते, हमारी धरती पर

लाखों लोग बेसहारा और लाचार हैं, अगर हमने न्याय को प्राप्त करने के लिए हिंसा का मार्ग चुना तो स्थिति बहुत खतरनाक हो जाएगी। हमारी गरीब जनता अत्याचार का शिकार हो जाएगी।" आज वैश्विक स्तर पर भी रूस और यूक्रेन का संघर्ष तृतीय विश्व युद्ध का रूप लेता जा रहा है। क्या युद्ध के बाद शांति की स्थापना हो सकती है? और कितने दिन तक ? यही कारण है वैश्विक स्तर पर 2 अक्टूबर गांधी जी के जन्म दिवस को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अंग्रेजों द्वारा स्थापित पूंजीवादी व्यवस्था के विरोध में गांधी जी का सरोकार नैतिक शिक्षा, कुटीर उद्योग से था। उन्होंने राजनीति को नैतिकता के साधन के रूप में देखा और उसी रूप में अपनाया। उनके नेतृत्व में चलाये गये स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारत को नैतिक पुनरुत्थान की ओर ले जाना था। यही कारण है की सन् 1920 में चलाया गया असहयोग आन्दोलन चौरी-चौरा काण्ड के बाद निरंकुश हो गया तब गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया। गांधी जी के व्यक्तिगत जीवन पर अनेक धर्मों का प्रभाव था, लेकिन ईश्वर और धर्म उनके लिए विशिष्ट अर्थ के प्रतिपादक हैं। सत्य को ईश्वर मानना और सत्य को किसी बाहरी धर्म या विचारधारा में ना मानकर उसे मनुष्यता के भीतर देखना गांधीवादी चिंतन की विशेषता है। यह मनुष्य को मनुष्यता के केंद्र में रखते थे। मनुष्यता किसी सत्ता या व्यवस्था द्वारा पैदा नहीं की जा सकती, इसलिए गांधी जी किसी सत्ता या व्यवस्था को बदलने की जगह मनुष्य के हृदय को बदलने पर सर्वाधिक जोर देते थे। स्वयं को बदलकर स्वयंसेवक समूह बनाते थे। प्रतीक रूप में गांधी जी के तीनों बंदर बुरा मत देखना, बुरा मत सुनना, और बुरा मत कहना यह स्वयं को बदलने की प्रक्रिया का ही हिस्सा है।

आधुनिक भारत के निर्माण के प्रति गांधी जी की नीति पूर्णतया देसी थी वह पश्चिमी सभ्यता के मांगों को गैरजरूरी मानते थे और उसके सांचे में ढलने के विरोधी थे। उनका मानना था कि पश्चिमी सभ्यता उपभोक्तावादी संस्कृति की पोषक है, जो नैतिक दृष्टि से सही नहीं है। जबकि नैतिक उत्थान का रास्ता आत्म संयम और त्याग भावना की मांग करता है। सन् 1927 ईस्वी में यंग इंडिया के एक लेख में लिखते हैं कि "मैं यह नहीं मानता की इच्छाओं को बढ़ाने या उसकी पूर्ति के साधन जुटाने से संसार अपने लक्ष्य की ओर एक कदम भी बढ़ पाएगा, भौतिक इच्छाओं को बढ़ाने और उनकी तृप्ति के लिए धरती का कोना-कोना छान मारने की जो अंधी दौड़ चल रही है वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।" भौतिक इच्छाओं से भौतिकवादी अवधारणा का जन्म होता है, इस भौतिकवादी अवधारणा ने ही उपनिवेशवाद को जन्म दिया। वे उपनिवेशवाद को पश्चिमी सभ्यता के अनिवार्य तत्व के रूप में देखते थे उनका दृढ़ विश्वास था कि इस भौतिकवादी सभ्यता को जो भी देश अपनाएगा उसे अनिवार्यतः अपनी जरूरत के लिए उपनिवेशवादी होना पड़ेगा।

गांधी दर्शन ने दुनिया को जो मार्ग दिखाया वह मनुष्य के चरित्र और स्वभाव को नए सांचे में ढालने पर बल देता है, उन्होंने शारीरिक श्रम के सिद्धांत की शिक्षा दी कि प्रत्येक मनुष्य को उपयुक्त शारीरिक श्रम करके अपने उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन में योगदान देना चाहिए। इसी से श्रम का महत्व बढ़ेगा, देश आत्मनिर्भर बनेगा, स्वच्छता सफाई जैसे कार्य से समाज में बराबरी को बल मिलेगा, बड़े-छोटे की भावना कम होगी, इसी को ध्यान में रखकर गांधी जी ने चरखा का सिद्धांत दिया था की हर घर में चरखा चलना चाहिए और चरखे से निर्मित वस्त्र हर भारतीय को धारण करना चाहिए। परिणाम स्वरूप इंग्लैंड के उद्योगों में बनने वाले वस्त्र भारतीय बाजार में अपेक्षतया कम होने लगे और अंग्रेजी अर्थव्यवस्था हतोत्साहित होने लगी। चरखा की योजना भी स्वदेशी के नारे का एक हिस्सा है। गांधी जी ने श्रम सिद्धांत को भारतीय अर्थव्यवस्था की कुंजी मानते हुए कहा "भारत की विशाल जनसंख्या को उपयुक्त श्रम में लगाया जाना चाहिए।" इसके लिए उन्होंने तकनीकी प्रधान उद्योगों के मुकाबले श्रम प्रधान उद्योगों को वरीयता दी। क्योंकि तकनीकी मूलतः मानव श्रम विरोधी होती है और पूंजीवाद के साथ तकनीकी विकास की संगति है। अतः पूंजीवाद और उसके द्वारा विकसित तकनीकी में एक तरह की समानता है और समाजवाद से इसका बुनियादी विरोध है। पूंजीवाद और तकनीकी विकास का ही नया अवतार भूमंडलीकरण है। भूमंडलीकरण के दौर में जो देश तकनीकी रूप से पिछड़े हैं, वे सुपर तकनीकी वाले देश पर आश्रित हो जाते हैं। सुपर तकनीकी वाले देश उत्पादक देश और पिछड़ी तकनीकी वाले देश उपभोक्ता देश कहलाते हैं। अतः पिछड़ी तकनीकी वाले देश के स्थानीय उत्पादन सुपर मार्केट में अपना

स्थान नहीं बना पाते क्योंकि सुपर बाजार पर नियंत्रण सुपर तकनीकी वाले देश का होता है। इस प्रकार स्थानीय उत्पाद का महत्व गिरने लगता है। धीरे-धीरे सुपर तकनीकी वाले देश का पिछड़ी तकनीकी वाले देश के बाजार पर अधिग्रहण हो जाता है। फिर उपनिवेशवाद का नया दौर बाजारवाद शुरु हो जाता है। अतः कहां जा सकता है कि भूमंडलीकरण साम्राज्यवाद का ही नया अवतार है, जो सुपर तकनीकी के कारण संभव हुआ। इस प्रकार महात्मा गांधी ने हिंद स्वराज में तकनीकी गुलामी के खतरों के प्रति हमें आगाह किया था, जो आज विकराल रूप लेकर हमारे सामने खड़ी है। भूमंडलीकरण के समाधान के रूप में गांधी जी का स्वदेशी का विचार सर्वाधिक उपयुक्त और प्रासंगिक है। गांधी जी की मान्यता थी लोगों को अपने देश में बनी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए ताकि यहां की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो सके। अप्रत्यक्ष अर्थ यह भी था कि लोग अपनी संस्कृति और स्वाधीनता के साथ लगाव अनुभव करें, ताकि यूरोपीय विचारों का अंधानुकरण न करने लगे। उनका यह विश्वास था किसी भी देश का विकास उसकी अपनी संस्कृति और मूल्य परंपराओं के अनुसार होता है दूसरी संस्कृतियों की नकल से नहीं। यही कारण है कि विकास और आधुनिकता की पश्चिमी अवधारणा से गांधी जी सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि प्रत्येक देश का अपना विकास मार्ग और अपनी आधुनिकता होती है। इन तमाम प्रश्नों की दृष्टि में गांधी दर्शन आज भी प्रासंगिक है।

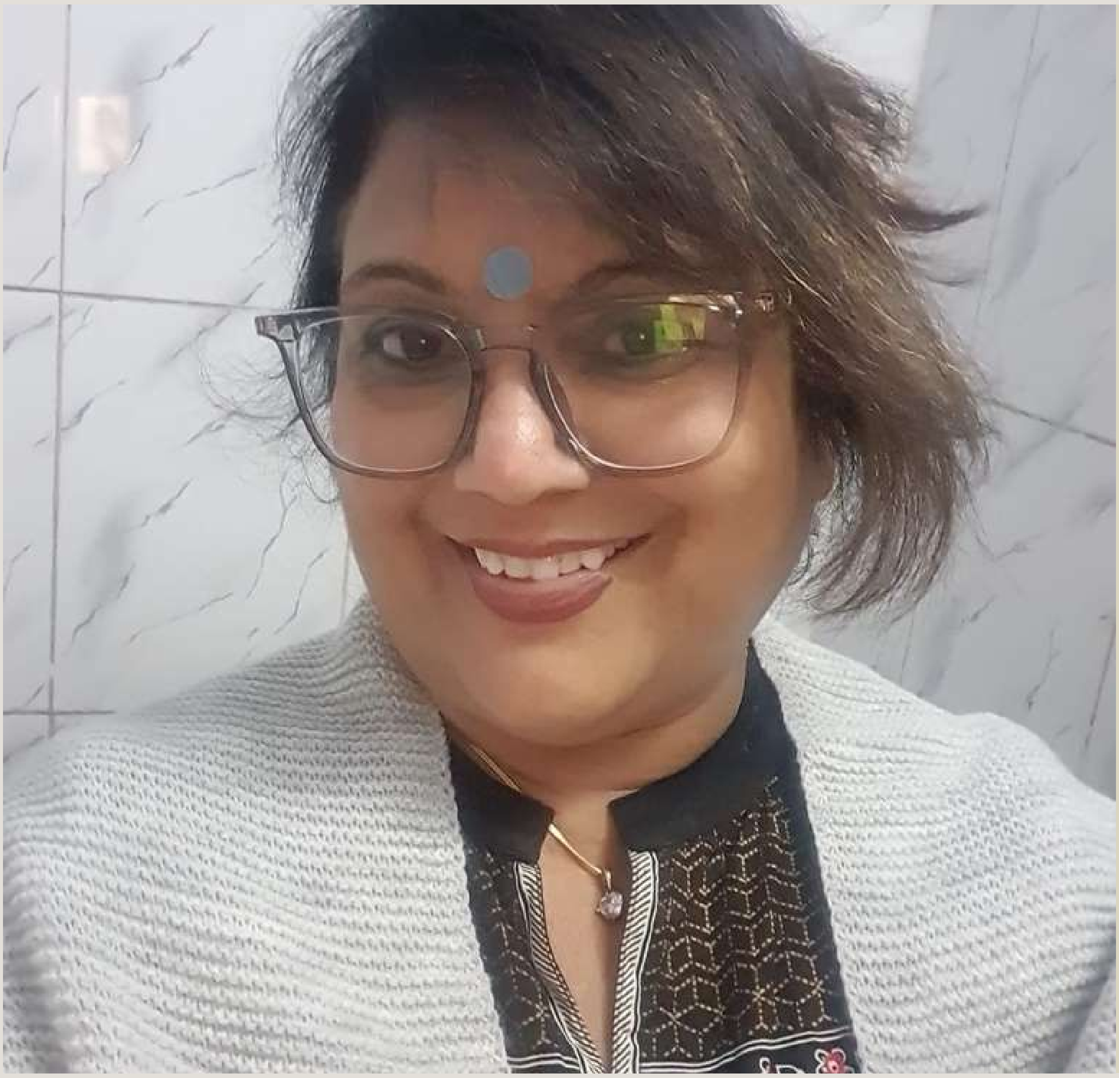

नटराज मंच

हम याद बहुत आएंगे
भारतेंदु बाबू को समर्पित

आदरणीया चित्रा मोहन जी प्रख्यात व वरिष्ठ रंगमंच निर्देशिका व प्रवक्ता हैं। आप भारतेंदु नाट्य अकादमी से सम्बद्ध रही हैं।
“हम याद बहुत आएंगे” महान नाट्यकार व आधुनिक हिंदी के प्रणेता भारतेंदु बाबू को समर्पित आपका मौलिक नाटक है। नाट्य-कला को समर्पित वीथिका के इस मंच पर इस अद्भुत, संगीतमयी नाटक का अंतिम अंक आप पाठकों के सम्मुख है।

हम याद बहुत आएंगे भारतेंदु बाबू को समर्पित

मौलिक नाटक

लेखिका- चित्रा मोहन

अंक 2 \ दृश्य 2

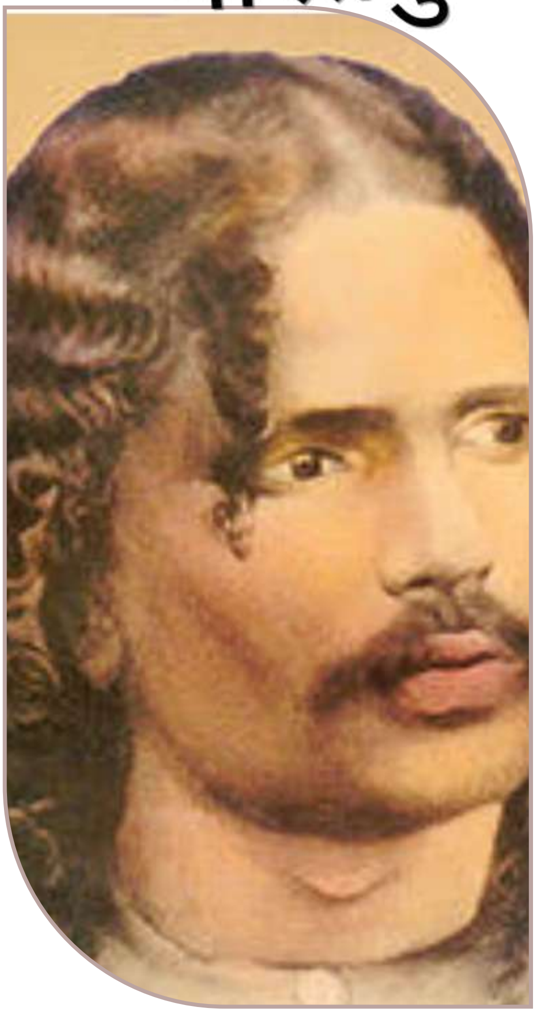

पात्र परिचय

भारतेंदु बाबू उम्र (समयानुसार 28 से 35 वर्ष तक)
लड़की -1- कोरस (नयना)
इशिता - 26 साल (ये भी दृश्यानुसार मन्नो देवी की भूमिका में भी)
चौबे पंडा: उम्र - 50
कोरस: 5 से 6 जनों का
मन्नो देवी: (रुक्मिणी/ललिता की भूमिका)
मल्लिका: (चंद्रावली / राधा)
लड़की - 2 - (सुमुखि) कोरस - (शोहदा, लाला, सोहा आदि कोरस से ही भूमिकाएं करेंगे)

कोरस: अरे मियां गुस्सा छोड़िये और फरमाइये कुछ अपनी भी।

शोहदा (लखनऊवा): आक्रोश से—.

सान सौकत तेरे असिक की मेरी जान जे है
जान देंगे तेरे दरवज्जे पे तेरे आसिक का अरमान जे
कही सुहदे भी पिचकते हैं, बिना जूते लातों के
आ तो डट जा, खम ठोंक के,इसक का मैदान जे है।

भारतेंदु: हुआ तो और भी बहुत कुछ लेकिन सबकी रें रें के पीछे एक नये ढंग के शायर, कबरिस्तान के फकीर, मरघट के बाम्हन एक नई अनोखी चाल की शायरी ले उठे। रेखती-फेखती सबसे अलग, मरसिये का भी चचा कहिये माशूक ही को कोसने लगे

कबरिस्तानी टाइप शायर:

फिर उन्हें हैजा हुआ, फिर सब बदन नीला हुआ
फिर न आने का मेरे घर में, नया हीला हुआ
कहरे हक (ख़ुदा का कोप) नाज़िल (उतरा) हुआ,
पत्थर पड़े वो मर गए।
फिर उन्हें आया पसीना सब बदन गीला हुआ।
कैसरे हिन्दोस्तों अब जान इसकी बख़्श दो,
देख लो रंजिश से सब, इनका बदन पीला हुआ।

भारतेंदु: का बताएं हम तो दूर से देख रहे थे इनको, दरअसल मन तो हमारा भी था कि कुछ कहते
कोरस: अरे तो कथा-कहानी चल ही रही है। तब न सही अब कहिये बाबू जी।
भारतेन्दु: हम क्या कहें? हमारा पूरा प्रयास है कि हिंदी राष्ट्र भाषा बने, निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल। बनारस के इस घाट पर बैठ कर कितनी गोष्ठियां की हमने। कल-कल बहती गंगा की धारा हमारे मन को बहाये लिए जाती है। हम आज हैं कल नही होंगे, पर ये बनारस का घाट ये बहती गंगा और संभवत: कुछ हमसे

नटराज मंच

प्यार करने वाले हमारे पीछे रह जाएंगे। शायद हम उन्हें बहुत याद आयेंगे

(बोलते-बोलते मूर्ति के पीछे चले जाते है पूरा कोर्स फ्रीज़ हो जाता है। इतिशा मेज के पास खड़ी पुस्तक को बंद कर देती है, फिर चलते हुए भारतेंदु जी की मूर्ति के पास आती है।)

इतिशा: बाबूजी, भारत के सिरमौर, भारत-भाल के इंदु भारतेंदु बाबू, इतनी कम उम्र ? मात्र 35 वर्ष लगभग नहीं-नहीं 34 वर्ष 3 महीने 27दिन, 17 घंटे 7 मिनट और 48 सेकेन्ड ही जिये आप। इतने समय में क्या-क्या नहीं लिखा? इतना समय कैसे निकाल लेते थे आप ? एक मैं हूँ आप पर रिसर्च करते तीन साल हो गये, पर लगता है आजीवन आपको, आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी तरह से कभी नहीं समझ पाऊँगी ?

(संगीत मुखर होता है, बहुत बीमार से भारतेंदु मूर्ति के पीछे से निकल कर आते हैं। वे लगातार खाँस रहे हैं)

भारतेंदु: (खांसते खांसते) मुझमें ऐसा था ही क्या, जो तुम नही समझ पाई ? एक साधारण इन्सान, जिसने साहित्य की सेवा करनी चाही, जिसने चाहा कि जिस धन ने उसके पुरखों को खाया उसे वह खा जाये, जिसने अपना पूरा जीवन लेखन, पत्रकारिता काव्य-नाट्य, और भी गद्य पद्म की तमाम विधाओं में होम कर दिया, जिसने हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए पीछे मुड़ कर नहीं देखा। जिसने केवल एक गुनाह किया वो गुनाह था, मल्लिका से प्रेम करना। हमने अपनी पत्नी मन्नो का दिल दुखाया। उसने बहुत सहन किया, हमको, हमारी आदतों को, हमारे कर्ज़ों के बोझ को भी सहा। हमारे खुले हांथ खर्चा करने की, लोगों की सहायता करने की आदत हमारी मुफलिसी में हमारा मज़ाक बनाएगी ये हमने कहाँ सोचा था ?

(खांसते है - कोने में रखी कुर्सी पर बैठते हैं।)

(संगीत तेज होता है, कोरस दूसरी ओर एक चौकी और तकिया रख कर उसे बाबू जी के शयन कक्ष का रूप देता है और दूर जा कर बैठ जाता है, करुण संगीत उभरता है।)

भारतेंदु: देखो सूर्य का उदय हो गया (खांसी आती है, इतिशा पानी लाने को मुड़ती है तो वे मना करके रोक देते है) अहा - इस की शोभा इस समय ऐसी दिखाई पड़ती है मानो अंधकार को जोतने के लिए दिन ने ये गोला मारा हैं या आकाश में कोई बड़ा लाल कमल खिला है? या काल के निर्लेप होने की सौगन्ध खाने वाला तेज का गुबार है, या आने वाली काली रात का संकेत देने वाला गजर का घंटा है –

(बुरी तरह खांसते-खांसते बेदम होकर अपने बिस्तर तक जाते हैं और निढाल हो गिर पड़ते हैं। इतिशा दौड़ का उन्हें ठीक से लिटाती है और गले तक चादर ओढ़ाती है।)

(संगीत मुखर होता है, भारतेंदु (गा उठते हैं) दूसरी ओर कोर्स दृश्य बनाता है और नृत्य आवर्तन आरम्भ होता है।)

नखरा राह-राह को नीको।
दूर तो प्रान जात हैं तुम बिन,
तुम न लखत दुख जीको ।
धावहु वेग नाथ करूनाकर,
करहु मान मत फीको ।
हरीचंद अब प्रस्थान की बेला।
मैं सुमरौ बस तुम ही को।

(गाते-गाते खांसते हैं कोरस नृत्य मुद्रा में फ्रीज होता है, भारतेंदु के पलंग से दूर मन्नो देवी (पत्नी) खड़ी हैं, कोरस में से कोई एक पूछता है।)

कोरस 1 : बाबू साहब कई बार बीमार हुए पर भाग्य अच्छे थे कि स्वस्थ होते गये।

कोरस 2 : सन 1882 में जब महाराजा साहिब, उदयपुर से मिलकर जाड़े के दिनों में लौटे तो रास्ते में बीमार हो गए।

कोरस 3: बनारस पहुँचने के साथ ही श्वास रोग से पीड़ित हुए।

कोरस 4: रोग दिनों-दिन अधिक होता गया। महीनों बाद लगा कि शरीर अच्छा हो गया परन्तु रोग जड़ से नहीं गया

(इसी बीच एक दूसरे स्पॉट में मल्लिका दिखाई देती है।)

मल्लिका: रोग का क्या है? तन से अधिक मन का रोग लगा बैठे बाबू जी आप। कितना समझाया पर

आप सा हठी नहीं देखा। रह-रह कर रोग उमड़ आता, फिर शांत होता क्योंकि औषधि चलती रही। इधर दो महिने से श्वास चलता रहा,परन्तु आपने अपना ध्यान नही रखा, कभी-कभी ज्वर का आवेश भी हो जाता **(संगीत)**

मन्नो देवी: औषधि तो होती रही परन्तु शरीर कृशित होता गया लेकिन ऐसा नहीं था कि किसी काम में हानि हो, जब श्वास अधिक चलने लगा तब पता लगा कि क्षय रोग ने धर लिया है **(करुण संगीत)** एकाएक दूसरी जनवरी से बीमारी बढ़ने लगी **(सहसा भारतेंदु कराहते हैं, बुरी तरह खांसते हैं सब उनकी ओर दो कदम बढ़ कर रुक जाते हैं।)**

(मल्लिका छटपटाती है, उनकी ओर हाथ बढ़ाती है परंतु दूरी होने के कारण विवश सी रोते हुए बैठ जाती है।)

(गाती है)

गीत:

प्राननाथ मन मोहन प्यारे बेगहि मुख दिखराओ ।
तलफ़त प्रान मिले बिनु तुमसों,
क्यों न अबही उठ आओ।

(दूसरी और भारतेंदु अटक-अटक कर बोलते हैं)

भारतेन्दुः

जानत भले तुम्हारे बिनु सब बादहिं बीतत साँसें।
हरिचंद नहीं छूटत तऊ यह कठिन मोह की फाँसें।

(मल्लिका स्पॉट में दिखती है।)

तुम गए सूरत भूल,पाती भी भिजवाई ।
फरियाद किया पर सुध तुमको ना आई।
हरिचंद बिना भई जोगन, मैं अलबेली।
मुझे छोड़ के ना जाओ पिया हाय अकेली।

(भारतेंदु किसी तरह कुर्ते की जेब से मल्लिका का तुडा-मुडा पत्र निकाल कर पढ़ते हैं और बोलते हैं, मन्नो दूसरी ओर खड़ी ये दृश्य देख कर क्रोध, बेचैनी और मान भरे मिश्रित भाव से उन्हें देखती है।)

संगीत का करुण आलाप गूंजता है।

भारतेंदु:

आह करेगे,तरसेंगे गम खाएंगे,
चिल्लाएंगे दीन व इमान बिगाड़ेंगे
घर बार डुबाएंगे।

(खांसी का स्वर)

फिरेंगे दर-दर बेइज्जत हो आवारे कहलाएंगे
रोएँगे हम हाल कह, औरों को भी रुलायेंगे

(मन्नो व मल्लिका का रुदन गूंजता है।)

भारतेंदु:(किसी तरह उठ कर बैठते हैं)

हाय-हाय कर सर पीटेंगे,तड़पैंगे कि कराहेंगे,
सहेंगे सब कुछ मुहब्बत दमतक यार निबाहेंगे

(बोलते हुए पलंग पर गिर पड़ते हैं। दृश्य फ्रीज़ होता है।)

इतिशा: (पास आती है किताब से पढ़ कर बोलती है) एकाएक दूसरी जनवरी से बीमारी बढ़ने लगी थी, 6 जनवरी बाबू जी की क्षय रोग से बिगड़ी,अंतिम दौर की दशा में, मन्नो देवी ने मजूरिन को हाल लेने ऊपर कमरे में भेजा, हाल लेने आई मजूरिन ने पूछा

कोरसा:(मजूरिन की तरह)- बाबू जी, हाल कइसन बा ? नीचे बहू जी पूछवायेन है।

भारतेंदु : जाकर कह दो अपनी बहू जी से कि हमारे जीवन के नाटक का प्रोग्राम नित्य नया छप रहा है। पहले दिन ज्वर का दूसरे दिन दर्द का तीसरे दिन खाँसी का सीन हो चुका। अब देखें लास्ट नाइट कब आती है **(बुरी तरह तड़पते है।)**

इतिशा: (किताब में देखते रुंआसी सी हो उठती है) लास्ट नाइट आ ही गई थी। क्षय रोग चरम पर था, श्वास तेज था, कफ में रुधिर आ गया। डाक्टर वैद्य सब उपस्थित थे, लेकिन मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की । एक बजे रात को भयंकर दृश्य उत्पन्न हुआ।

(करुण संगीत के साथ तड़पते भारतेंदु दिखते है। सिर झुकाये लोग खड़े है जो उनसे दूरी पर है।)

(भारतेंदु स्वप्र की सी अवस्था में पलंग से उठ कर बोलते हुए धीरे-धीरे मूर्ति के पीछे चले जाएंगे,अंतिम वाक्य के बाद)

सबकी चीख और पलंगपर पड़ी सफेद चादर सांकेतिक तौर से खींच दी जाएगी मानो वो बाबू जी का शव हो । आत्मा रूपी भारतेंदु का स्वगत सम्भाषण। इस संवाद के बीच वे मल्लिका और मन्नो दोनो के निकट जाते हैं, उन दोनो का हाथ थामे मंच के आगे एक स्पॉट में आते है।

भारतेंदु :
होके तुम्हारे कहाँ जाएँ अब इसी शर्म से मरते है
अबतो यौ ही छोड़ इस जहाँ को हम चलते हैं
करेंगे याद हम सभी को, पर अब न लौट के आएँगे
तुम भी हमें न भूल पाओगे, हम याद बहुत आएंगे ।

(इस अंतिम वाक्य में वो दोनो स्त्रियों का हाथ छोड़ मूर्ति के पीछे समा जाते है। सबका रोना पीटना करूण संगीत धीरे-धीरे मंच से प्रकाश लुप्त होता है, कोरस पूर्वाभास की रूपरेखा में वापस दिखाई पड़ते हैं। कोरस ताली बजाता है।)

भारतेंदु के चरित्र वाला कोरस का अभिनेता(जो कुर्सी पर बैठा हैं बोलता है)- भई पूर्वाभ्यास तो ठीक ही रहा, लेकिन अभी कुछ दृश्यों में ओवर एक्टिंग की जरूरत नहीं थी, इसलिए आप सभी को इसका अभ्यास करना होगा। हमें भी भारतेंदु जी के संवाद तो याद हो गए पर भारतेंदु जी के चरित्र में पूरी तरह उतरने में समय लगेगा। वैसे भारतेंदु जी के बारे में उन्हीं की पंक्तियां याद आ गई जो उनकी घनेरी ज़ुल्फ़ों को देख एकदम सही बैठती है। क्या शेर कहा है।

कोरस: इरशाद इरशाद -
अभिनेता भारतेंदु:
ज़ुल्फ़ के फंदे तुम्हारे यार निराले हैं
दिल के पहुंचने को गालों तक कामंद डालें हैं।
जंत्र मंत्र कुछ लगेगा न उसको,
जिसको इन सांपों ने डंसा।
हरीचंद के ज़ुल्फ में दिल हमारा
अब तो बेतरह फंसा ।
(सब वाह-वाह करते हैं और समवेत स्वर में बोलते हैं।)

भारतेंदु जी की मूर्ति पर प्रकाश,भारतेंदु पीछे से झांकते है और बोलते हैं,
"प्यारे दर्शकों ! हम तो अतीत हो कर इस काल खंड में सिमट चुके, हमारी यादों के खंडहर हमारी बुलंदी के क़िस्से सुनाएंगे, अपनी-अपनी नज़र से देखेंगे लोग हमकोऔर आने वाली पीढ़ी को हमारे बारे में बताएंगे कि हम भारत के इंदु भारतेंदु की उपाधि से विभूषित किये गए। याद रखियेगा इंदु यानि चांद बहुत खूबसूरत दिखता है,काशी के ज्योतिर्लिंग, बाबा भोले नाथ के शीश पर विराजता है,सोलहों कलाओं से परिपूर्ण भी होता है किंतु उसमें भी दाग होता है। मुझे भी मेरे अवगुणों को भूल कर याद कीजियेगा। मुझे पता है कि........
(इतिशा ग्रंथ बंद करती है। भारतेंदु पर प्रकाश मद्धिम होता है)
भारतेंदु:
करेंगे याद हम सभी को पर अब न लौट के आएंगे
तुम भी हमें न भूल पाओगे, हम याद बहुत आएंगे,
हम याद बहुत आएंगे

(सब पर प्रकाश लुप्त होते हुए अंत में मूर्ति पर जा कर कुछ पल केंद्रित होता है। संगीत के साथ अंधकार)

समाप्त
दिसंबर 2022
चित्रा मोहन

इस नाटक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं, बिना लेखिका की सहमति के किसी भी प्रकार का प्रयोग अनुमन्य नहीं है।

(वीथिका ई पत्रिका ने यह शानदार नाटक प्रख्यात निर्देशिका, लेखिका चित्रा मोहन जी की अनुमति से जून, 2023 से अक्टूबर 2023 तक 5 अंकों में प्रकाशित किया है, पिछले चार अंक पाठक हमारी वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं)

संगीत जीवन में और जीवन संगीत में

डॉ अरविंद कुमार उपाध्याय (संगीत विभाग)
श्री मु०म०टा०स्ना० महाविद्यालय, बलिया

ईश्वर ने संसार के सभी चेतन प्राणियों को बनाया है। अन्य जीव भी साथ रहकर जीवन व्यतीत करते है परन्तु इन सभी में जिसको सर्वश्रेष्ठ माना गया है, यह है मनुष्य मानव जीवन ही अकेला ऐसा जीवन है जिसमे संसार के सभी सुख-दुःख, उपलब्धियां, जिम्मेदारी ,लक्ष्य ,संबंधों का समावेश है। मनुष्य को ही सबसे अधिक बुद्धिमान माना गया है। ऐसा इसलिए है कि मनुष्य बाकी जीव जन्तुओं से भिन्न है।

मानव शरीर पंचकोषों से निर्मित है जो निम्नलिखित है-
1.संगीत शिक्षा-- मनोमय कोष के विकास हेतु
2.शारीरिक शिक्षा-- अन्नमय कोष के विकास हेतु
3. योग शिक्षा-- प्राणमय कोष के विकास हेतु
4.संस्कृत शिक्षा-- विज्ञानमय कोष के विकास हेतु
5. नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा -आनन्दमय कोष के विकास हेतु

उक्त प्रथम कोष संगीत शिक्षा का उद्देश्य संगीत के माध्यम से मानव जीवन में बौद्धक शक्ति, इच्छा शक्ति, स्वरण शक्ति आदि का विकास करना है। मानव जीवन में संगीत का महत्व निर्विवाद है। संगीत से चित निर्मल होता है और व्यक्ति अपने आवेगो-संवेगों पर नियंत्रण कर सकता है। प्रेम का मार्ग संगीत है और व्यक्ति अपनी जकड़नों को तोड़कर वाह्य आडम्बरों को चकनाचूर कर अपने अन्दर स्फुटित होने वाली आनन्द की तरंगों का अनुभव करता है। मानसिक तनाव को कम करते हुए हर्ष एवं विषाद आदि गुणों को विकसित

इससे मनुष्य में आपसी भाईचारे की भावना विकसित होती है। संगीत हमारे जीवन में आन्तरिक आवश्यक भूमिका निभाता है। यह जीवन भर हमारी मानसिक और भावनात्मक समस्याओं से लड़ने में मदद करता है। संगीत की प्रकृति प्रोत्साहन और बढ़ावा देने की है जो सभी नकारात्मक विचारों को हटाकर मनुष्य की एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाता है। संगीत एक व्यायाम है जिससे शरीर के आंतरिक अवयवों का व्यायाम होता है और आक्सीजन की वृद्धि भी फलस्वरूप पाचन शक्ति गहरी नींद और हड्डियों की मजबूती का स्थूल लाभ मिलता है। साथ ही मनुष्य के अन्दर दया, प्रेम, करुणा उदारता, क्षमा, आत्मीयता और सेवा के भावों का भी तेजी से विकास करता है। मानव का संगीत के प्रति स्वाभाविक प्रेम ही इस बात का प्रमाण है कि यह कोई नैसर्गिक तत्व और प्रक्रिया है। नाचना गाना और बजाना मनुष्य समाज की सुखद कलाएं है। यदि यह न हो तो मनुष्य जीवन जैसा नीरस और कुछ न रह जाय।संगीत का मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर पर विलक्षण प्रभाव पड़ता है और उससे मूल चेतना के प्रति आकर्षण और अनुराग बढ़ता है। कला के प्रति अनुराग का बढ़ना अध्यात्म की प्रथम सीढ़ी है। ऐसे व्यक्ति में भावनाओं का होना स्वाभाविक है।

अध्ययन के अनुसार यदि बालक को संगीत की शिक्षा दिलाई जाय तो उसके बौद्धिक स्तर का विकास होता है और साथ ही उनकी स्मरण शक्ति मजबूत हो जाती है, तथा उनका मस्तिष्क संगीत की धूनों को विशिष्ट शैली में ग्रहण करता है।

संगीत मनोरंजन के साथ-साथ बौद्धिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का पोषक भी है। अतः मानवीय जीवन को समृद्ध बनाता है। यह प्रत्येक व्यक्ति को एक धर्म निरपेक्ष विस्तृत विचारधारा प्रदान करता है। संगीत राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। संगीत एक ऐसा विषय है जो वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विकास करता है। संगीत कभी हिन्दू मुस्लिम, सिख व इसाई नही होता, केवल संगीत का आराधक होता है। संगीत अमीर-गरीब, बड़े-छोटे किसी में भेद नही करता। संगीत के द्वारा भावनात्मक एकता का एक अच्छा उदाहरण अकबर का शासान काल है। संगीत में ही मानव जाति को एक सूत्र में बांधने की आपार क्षमता होती है। संगीत जाति धर्म तथा राष्ट्रीयता के बन्धन से मुक्त है। यह दया, सहानुभूति तथा क्षमाशीलता आदि गुणों को भी सिखाता है।

कोई भी शिक्षा संगीत के बिना अपूर्ण है, क्योंकि इससे ही सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। यह मनुष्य की रचनात्मक प्रवृत्ति एवं क्षमता को प्रकाशित करता है। इससे मनुष्य के संवेगात्मक, शारीरिक एवं मानसिक तीनो पक्षों का विकास होता है। समूह में गायन या वादन, मैचिंग धुन तथा लयकी प्रशिक्षा इत्यादि बालक को अनुशासन एवं उत्तरदायित्व की भावना का प्रशिक्षण देती है। युद्ध के मोर्चा पर उत्साह वृद्धि के लिए वर्तमान युग में भी विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के विभिन्न प्रकार के संगीत का ही प्रयोग करते है। अट्टाहास करती हुई मृत्यु के उस बीभत्स वातावरण में सैनिकों के मस्तिष्क का सन्तुलन ठीक रखने एवं गगन भेदी तोपों के भयावने गर्जन में कर्तव्य की कसौटी पर खरे उतरने की शक्ति संगीत ही प्रदान करता है।

किसी भी युग में क्या एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की जा सकती है, जो संगीत से लेश मात्र परिचित न हो ? सम्भवतः नहीं। इसका मूल कारण है संगीत और मानव का अटूट सम्बन्ध, दूसरे शब्दों में मानव जीवन ही स्वयं संगीत का जीवन है अथवा संगीत का जीवन ही स्वयं संगीत का जीवन है।

अमेरिका की कला पत्रिका "दि अंदर ईस्ट विलेज "में भारतीय संगीत की भूमि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है- "मनुष्य की भितरी सत्ता को राहत देने और तरंगीत करने की भारतीय संगीत के ध्वनि-प्रवाह में अपने ढंग की अनोखी क्षमता है"। ध्वनि एक निश्चित भौतिक प्रक्रिया है जिस प्रकार प्रकृति और प्राणि जगत में प्रकाश और गर्मी के प्रभाव होते हैं, उसी प्रकार ध्वनि में भी तापीय और प्रकाशीय ऊर्जा होती है और यह प्राणियों के विकास में इतना महत्वपूर्ण स्थान रखती है जिसका अन्न और जल। संगीत के सात स्वरों के अपने अलग-अलग रंग होते है। प्रत्येक स्तर की तरंग का जो रंग होता है, वह शरीर और मन को प्रभावित करता है। संगीत से जो तरंग निकलती है उसका मानव के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। देखा गया है कि शरीर में प्रातः काल और सायं काल ही अधिक शिथिलता रहती है उसका कारण प्रोटोप्लाज्मा की शक्ति का ह्रास होताहै। उस समय यदि भारी काम करें तो शिथिलता के कारण शरीर पर भारी दबाव पड़ता है और मानसिक खीझ और उद्विग्नता बढ़ती है। संगीत की स्वर लहरियां शिथिल हुए प्रोटोप्लाज्मा की उस तरह की हल्की मालिस करती है, जिस तरह किसी बहुत प्रियजन के समीप आने पर हृदय में मस्ती और सुहावनापन छलकता है। संगीत के परमाणुओं में मानव की वृत्तियों को प्रशस्त करने के साथ-साथ आत्मिक शक्ति का अविर्भाव करने की शक्ति भी निहित है। चारित्रिक उत्थान एवं वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन भी संगीत ही है।

शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों ने संगीत की उन विलक्षण बातों को पता लगाया है जो मनुष्य शरीर में शास्वत चेतना को और भी स्पष्ट प्रमाणित करती है। संगीत का अब सम्मोहिनी विद्या के रूप में विदेशों में विकास किया जा रहा है। अनेक डॉक्टर सर्जरी जैसी डॉक्टरी आवश्यकताओं में संगीत की ध्वनि तरंगों का उपयोग करते है।

किसी ने सही कहा है कि "संगीत की कोई सीमा नहीं है, यह तो सभी सीमाओं से परे है और "संगीत जीवन में और जीवन संगीत में निहित है।

INDIA AND AI

BY RAJ BARETHIA
SOFTWARE ENGINEER

HEAR THE TERM ARTIFICIAL INTELLIGENCE (AI) AND YOU MIGHT THINK OF SELF-DRIVING CARS, ROBOTS, CHATGPT OR OTHER AI CHATBOTS, AND ARTIFICIALLY CREATED IMAGES. BUT IT'S ALSO IMPORTANT TO LOOK BEHIND THE OUTPUTS OF AI AND UNDERSTAND HOW THE TECHNOLOGY WORKS AND ITS IMPACTS FOR THIS AND FUTURE GENERATIONS.

AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) IS A CONCEPT THAT HAS BEEN AROUND, FORMALLY, SINCE THE 1950S, WHEN JOHN MCCARTHY FIRST COINED THE TERM “ARTIFICIAL INTELLIGENCE” IN 1956, IT WAS DEFINED AS A MACHINE'S ABILITY TO PERFORM A TASK THAT WOULD'VE PREVIOUSLY REQUIRED HUMAN INTELLIGENCE I.E. ENGINEERING OF MAKING INTELLIGENT “THINKING MACHINES”.

Our level of intelligence sets us apart from other living beings and is essential to the human experience. Some experts define intelligence as the ability to adapt, solve problems, plan, improvise in new situations, and learn new things.

With intelligence sometimes seen as the foundation for human experience, it's perhaps no surprise that we'd try and recreate it artificially in scientific endeavors. And today's AI systems might demonstrate some traits of human intelligence, including learning, problem-solving, perception and even a limited spectrum of creativity and social intelligence.

Despite its widespread lack of familiarity, AI is a technology that is transforming every walk of life. It is a wide-ranging tool that enables people to rethink how we integrate information, analyze data and use the resulting insights to improve decision making. Here, this comprehensive overview is to explain AI to an audience of interested observers, and demonstrate how AI already is altering the world and raising important questions for society, the economy, and governance.

An intelligent system that can learn and continuously improve itself is still a hypothetical concept. However, it's a system that, if applied effectively and ethically, could lead to extraordinary progress and achievements in medicine, technology, and more.

HOW ARTIFICIAL INTELLIGENCE CAN HELP INDIA ?

Even as the world utilizes AI in different applications ranging from defense to self-driving cars to robotics, in the Indian context, AI is being projected as a technology for all. The Indian government is aiming to leverage AI, predominantly for inclusive development and social empowerment, to improve manufacturing, productivity, and healthcare, and enable new agricultural technologies and power.

Manufacturing

AI can help factories perform tedious tasks such as data entry and order processing, identify inefficiencies in equipment and hidden patterns in workflows, anticipate possible disruptions in supply chain, and optimize everything from product quality and production to design and operations.

Agri-Tech

AI-powered solutions, often through smartphone apps, to improve their crop yield in a sustainable manner. These smart applications allow the sector to better track the quantity and quality of the crop yield, seamlessly manage supply chain and warehousing, predict possible disruptions from weather and pests, and improve overall productivity and efficiency.

Healthcare

AI-based predictive analytics can help spot patterns; identify patients at risk of diseases and disorders such as heart anomalies and diabetes. The technology has the potential of offering personalized medical support, identifying vital signs through smart devices, boosting medical preparedness in emergencies, and enabling remote monitoring and diagnostics.

Education

AI-based education models have the power to transform our education sector. It can offer critical support to teachers, develop inclusive and accessible education models, simplify online assessments, and automate evaluations. AI applications can help track student outcomes and enable timely intervention to improve future performance.

Mobility and Transportation

AI technologies show promise in making transport safer for both drivers and pedestrians, can study historic traffic patterns and predict congestion. Therefore, reduce cost as well as the carbon emissions, and improve overall efficiencies.

Smart Cities and Infrastructure

Indian cities — home to around 40% of the total population by 2030 and integrated with smartphones – will essentially be data goldmines. By utilizing Big Data, technologies like AI can identify challenges and provide smart solutions to address complex infrastructure problems of urban ecosystems. This will make cities more efficient, sustainable, and livable for people.

INDIAN INITIATIVES

"We want India to become the global hub of AI... Our bright minds are already working towards it", stated **Hon'ble Indian Prime Minister Narendra Modi Ji** in 2020, highlighting India's goal to become a global leader in responsible AI for social empowerment and inclusion.

Here are just a few of the hundreds of Indian start-ups building AI tools and products to address national and global socio-economic challenges:

- Niramai is an AI start-up that provides affordable and fast breast cancer screening at clinics in rural India.
- Crop-In is an intuitive, intelligent, self-evolving system that delivers future-ready farming solutions to the entire agricultural sector.
- Aquaconnect is a company founded in 2017 that works with shrimp and fish farmers to increase farm production, financial access, and market connectivity.
- Gnani develops voice assistants and speech analytics products for multiple languages, including Indic languages.
- 'e-Paarvai' by the Tamil Nadu State Government. Developed to overcome the shortage of ophthalmologists, e-Paarvai is an intelligent AI-powered mobile application that detects cataracts.
- The MyGov Corona Helpdesk (from MeitY). At the pandemic's peak, with misinformation and fake news being circulated on social media about the COVID pandemic, the country's citizen engagement platform, MyGov, the Ministry of Health and the AI startup Haptik launched MyGov Corona Helpdesk chatbot. The goal of this chatbot is to bring awareness to COVID-19 and prepare India to combat it.

IMPACTS AND CONCERNS

No technology is fail-proof. For a fruitful integration of AI and society, we also need to critically examine the issues within AI and its implementation.

- **Privacy:** The encroachment of technology into every aspect of our lives presents a concern for many. How far and to what extent should we allow data collection. With an AI system of strong computational power, what will these datasets divulge? The impact on humanity can be immense!
- **Data Security:** Incidents of accidents in driverless cars indicate the lack of emotional sensing in machines. The problem of managing and securing such a vast amount of data can be challenging. In wrongful access, it can become someone's economic and military asset.
- **Control:** In an AI integrated society, a disproportionate control of data servers by a few developed countries over others necessitates the need for a global organization to step in for dispute resolutions.
- **Unemployment:** While AI will automate some of the more time-consuming jobs, There is a great degree of uncertainty regarding predictions, because AI is still in its infancy.

CONCLUSION

Numerous forecasts suggest AI will add USD 967 billion to India's economy by 2035 and USD 450–500 billion to its GDP by 2025. This will account for 10% of the country's USD 5 trillion GDP target, making it a crucial tool for economic growth.

India sees AI as a tool for social empowerment and inclusion and focuses on developing AI tools for the global south. India's AI policy has firm roots in responsible AI principles and strives to ensure that international frameworks are designed to provide the same.

Nevertheless, we must acknowledge that AI holds immense potential for the upliftment of society as a whole. At the same time, we must be prudent to recognize the perils of ignorance when it comes to AI .

Mert Engem Szeretsz

(हंगेरियन कवि एडी आंद्रे की कविता का हिन्दी अनुवाद)

क्यों कि तुम मुझसे प्रेम करती हो

अनुवादक -

इन्दुकांत आंगिरस

Mert Engem Szeretsz
Áldott csodáknak
Tükre a szemed,
Mert engem nézett.
Te vagy a bölcse,
Mesterasszonya
Az ölelésnek.
Áldott ezerszer
Az asszonyságod,
Mert engem nézett,
Mert engem látott.
S mert nagyon szeretsz:
Nagyon szeretlek
S mert engem szeretsz:
Te vagy az Asszony,
Te vagy a legszebb.

हैरान, शुक्रगुज़ार है आईना
तुम्हारी इन निगाहों का
क्योंकि तुमने देखा था मुझे ।
तुम हो सबसे ज़हीन
बेगम गणिका
आलिंगनों के लिए।
हज़ार बार शुक्रिया
तुम्हारे लावण्य का
क्योंकि तुमने मुझे निहारा था
क्योंकि तुमने मुझे देखा था।
और क्योंकि तुम बहुत प्रेम करती हो :
मैं तुमसे अथाह प्रेम करता हूँ
और क्योंकि तुम मुझसेप्रेम करती हो :
तुम हो एक गणिका
तुम हो सुन्दरतम।

(कवि Ady Endre का जन्म 22 नवम्बर 1877 को रोमानिया में हुआ व इनकी मृत्यु 27 जनवरी 1919 को बुडापेस्ट में हुई)

आपका युट्युब लिंक :

Sahitya Sargam

https://www.youtube.com/@SahityaSargam/featured

कोणार्क सूर्य मंदिर में संगीत

वैष्णवी श्री
बांसुरी वादिका
संगीत विद्यार्थी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारत की सांस्कृतिक पहचान यहाँ की महान शिल्प और स्थापत्य कला है जिसने मानव जगत को एक से बढ़कर एक अप्रतिम और अनन्य धरोहर दिए हैं भारतीय संस्कृति की भव्यता यहाँ के प्राचीन मंदिरों की दीवालों पर मानो अनंतकाल के लिए उकेरी गयी हो ऐसा ही एक अतिभव्य और शानदार मंदिर ओडिशा के पुरी शहर से लगभग 35 किलोमीटर (22 मील) उत्तर-पूर्व राजा नरसिम्हादेव प्रथम द्वारा तेरहवीं सदी में निर्मित कोणार्क सूर्य मंदिर है ।
लगभग 12 एकड़ में फैले कोणार्क मंदिर को बनाने में 1,200 शिल्पकारों ने लगभग बारह साल तक मेहनत की थी। सन 1250 ई. में इस सूर्य मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ था।

कोणार्क सूर्य मंदिर की दीवारों पर कलिंगा वास्तुकला एवं शिल्पकला का अप्रतिम स्वरूप देखने को मिलता है। मंदिर की दीवारों पर फूल, बेल, ज्यामितीय आकृतियों की नक्काशी की गयी है। इसके अलावा मानव, गंधर्व, देव, किन्नर, पशु, रथ, चक्र, विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों आदि की भी आकृतियाँ निर्मित हैं।
कोणार्क मंदिर की दीवारों पर संगीत के प्राचीन अस्तित्व के कई प्रमाण देखने को मिलते हैं। भारतीय संगीत का अभिप्राय गायन, वादन और नृत्य तीनों से ही है। मंदिर की दीवारों पर विभिन्न प्रकार के वाद्य यन्त्रों की तथा नृत्य की नक्काशी देखने को मिलती है। सबसे रोचक एवं आश्चर्यजनक बात यह है कि सभी मूर्तियों में नृत्य एवं वाद्य यंत्रों का प्रदर्शन स्त्रियों द्वारा ही दिखाया गया है।

शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकर" में वाद्यों के चार प्रकार बताये गए हैं। वाद्य यन्त्रों के चारों प्रकार निम्नलिखित हैं-
1. तत् वाद्य - तार पर आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य,
2. सुषिर वाद्य - वायु द्वारा ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य,
3. अवनद्ध वाद्य- चमड़े पर आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य
4. घन वाद्य धातु के टकराव से ध्वनि उत्पन्न करने - वाले वाद्य

कोणार्क मंदिर की दीवारों पर उपरोक्त वाद्यों के सभी प्रकार (जैसे वीणा, शंख, बांसुरी, मर्दाला मंजीरा - आदि) की वादिकाओं तथा नृत्यांगनाओं की नक्काशी दीवारों पर देखने को मिलती हैं।
संगीत की विद्यार्थी होने के कारण मेरी कोणार्क यात्रा इन अद्भुत मूर्तियों पर टिक कर रह गयी। इन्हें देखने भर से मन में जो रोमांच हुआ उसने भारतीय संगीत और संस्कृति के प्रति मेरी आस्था को और भी अधिक दृढ आधार दिया ।

वरिष्ठ कवि जितेन्द्र मिश्र "काका" मऊ

खड़ा कर दिया मतभेदों नें,
आंगन में दीवार।
फीकी फीकी रही दिवाली,
होली अबकी बार।

दिया अभावों नें अक्सर ही,
नफरत की सौगातें।
कब क्यों कैसे बड़ी हो गई,
छोटी छोटी बातें।

टूट गया संवाद आपसी ,
हुआ प्रेम लाचार

बाँट लिए घर खेती बारी,
गहना बर्तन सारा।
होने लगा बीच में अब तो,
रिश्तो का बंटवारा।

कुटिल चाल की भेंट चढ़ गया,
अम्मा का उपचार।

सुख शांति सद्भाव के लिए,
क्या-क्या यत्न किये।
आंगन में तुलसी चौरा पर,
मां ने रखे दिये।

घर के मंदिर सम्मुख छुप छुप,
रोई कितनी बार।

फीकी फीकी रही दिवाली,
होली अबकी बार।

ग़ज़ल ©बृजेश गिरि

**बात बहुत पुरानी लिख दूँ क्या,
फिर से राजा-रानी लिख दूँ क्या!**

**तुम्हारे बस इतना कह देने भर से,
अब आग को पानी लिख दूँ क्या!**

**मेरा हाल-चाल जो पूछ रहे हो ,
कितनी है परेशानी लिख दूँ क्या!**

**सच पे तुम कितने परदे डालोगे,
लोगों को है ये हैरानी लिख दूँ क्या!**

**सबके मन की लिखते-लिखते,
अपनी भी इक कहानी लिख दूँ क्या!**

गाँधी जयंती © रजनीकांत तिवारी

**हाँ मैं गाँधी हूँ, किन्तु सत्ता का भोगी नहीं,
देश का स्वाभिमान हूँ, परतंत्रता मुझे सहन नहीं
चाहे जो कहता हैं, कहने दो
मैने बोलकर नही कहकर, करके दिखलाया है**

**आज स्वतंत्र हो जिस धरा पर तुम वो भूमि तुम्हें दिलवाया है
बहुतों ने आहूति देकर इसे स्वतंत्रता कराया है
आसान है, मुझे दोषी ठहराना
आनंद के लिए गलत साबित कर जाना
अंग्रेजों को बाहर फेंका था तुम्हारे लिए हमने
तुमअपने घर का ही कूड़ा फेंक कर दिखलाओ**

**हमने स्वतंत्र भारत को किया था
आप स्वच्छ भारत तो कर के जाओ
मत कहो भले इसे गाँधी जयंती
मगर भारत को स्वच्छ भारत बनाओ ।**

सीमांत अन्न ©डॉ धनञ्जय शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वोदय पी.जी. कॉलेज
मऊ

मिलेट ईयर मनाया जा रहा था,
और फायदे गिनाए जा रहे थे
नाटे बेडौल थोथले और मोटे अनाज के।

जो पिछड़ गए थे,
उत्तर आधुनिकता के दौर में
कारपोरेट के बाजार में
हरित क्रांति की योजना से,
पतले लंबे छरहरे नुकीले और कोरदार अनाज से।

मैने भी सोचा बना लूं
अपने खेत का हिस्सा,
और लिख दूं
गेहूं जौ धान चना के साथ
मडुआ सांवा और कोदो का किस्सा।

बहुत खोजा,
मकान दुकान खेत खलिहान,
पर नहीं मिला मोटे बौने अनाज का दाना।

दिन गुजरे अरसा बीत गया,
घूमते हुए मिल गया
आदिम जाति के घर से,
पुराने कपड़े में बंधा
धुंध खाए खूंटी पर अड़ा,
मोटे अनाज का लाल दाना मडुआ।

लाया गया फर्म में,
रसायनिक खाद संग फेंट
जैसे डाई,यूरिया, जिंक, फास्फेट
मूल तथ्य को आधुनिक विचार संग बो दिया गया।

पर! नही कोई निखार
दो चार अंकुर को छोड़
बाकी गए सब बेकार........

क्योंकि खो चुके थे अपनी प्रजननता,
संकट ग्रस्त अन्न की भांति
नही पाया गया पराली में,
लंबे अरसे से नहीं देखा गया
भोजन के थाली में,

अब जरूरत है इन्हे भी
अपने प्राकृतिक आवास की,
बाघ संरक्षण की भांति
कुदन्न संरक्षित जोन की।
और वर्ष में सात दिन
मिलेट सप्ताह मनाने की।।

भगत सिंह का चित्र © माहेश्वर जोशी

देहरादून

एक अंग्रेजी हैट, छोटी-छोटी मूछें
एक खूबसूरत चेहरा
आँखों से झांकती सच्चाई
एक नौजवान का चित्र
क्या वाकई! सिर्फ एक चित्र

ये चित्र खुद में समेटे हुए है
सैंकड़ों सालों का इतिहास,
मंगल पांडे ने गुलामी के खिलाफ
जो पहली गोली चलाई
उस गोली की गूंज
छिपी है इसी चित्र में
करतार सिंह और खुदीराम बोस
फंदे से झूलते हुए दिखाई देते हैं इस चित्र में

जनरल डायर ने 1919 में
इंसानियत को जो गहरे ज़ख्म दिये
वो ज़ख्म साफ-साफ दिखाई देते हैं इस चित्र में

निहत्थे देशवासियों के सिर पर
गोरे हाथों से बरसती लाठियां
और साम्राज्यवाद के सड़े गले ताबूत में
वो आखिरी कील का गूंजता नारा
सुनाई देता है इस चित्र में

एक जांबाज़ क्रांतिकारी
जो घिरकर भी लड़ता है
और देता है सर्वोच्च बलिदान
उस आज़ाद की वीरता
दिखाई देती है इस चित्र में

तीन देशभक्त, एकदम जवान
हंसते हंसते फाँसी घर की तरफ जाते हुए
दिखाई देते हैं इस चित्र में
देश का सच्चा भगत कैसा होता है
ये बिल्कुल ही साफ-साफ
दिखाई देता है इस चित्र में